No. of Printed Pages : 5

MSK-01

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2022

एम. एस. के.-01 : संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश : *दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

निर्देश : अधोलिखित में से किसी **एक** की विस्तृत व्याख्या कीजिए। 20

1. विरतास्वभिधासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
   सा वृतिर्व्यजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च

शब्दबुद्धिकर्मणां विरम्य व्यापाराभावः इति नयेना-भिधालक्षणातात्पर्यारण्यासु तिसृषु वृत्तिषु स्वं स्वमर्थं बोधयित्वो पक्षीणासु यया अपरोऽन्याऽर्थो बोधयते सा शब्दस्यार्थस्य प्रकृति प्रत्ययादेश्च शक्तिर्व्यञ्जनध्ययन-गमन प्रत्यायानादि व्यपदेशविषया व्यञ्जना नाम।

अथवा

तत्र नायकः—त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यशीलवान्नेता।

दक्षः क्षिप्रकारी। शीलं सद्वृत्तम। एवमादिगुणसम्पन्नो नेता नायको भवति

धीरोदात्तो धीरोद्धतस्तथा धीरललितश्च।

धीरप्रशान्त इत्ययमुक्तः प्रथमश्चतुर्भेदः

2. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैर्धरूढै।

राविर्भूत प्रथममुकुलाः कन्दलीश्यानुकच्छम्

जग्धारण्येस्वधिक सुरभिं गन्धामाघ्राय चोर्व्याः।

सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम्

(ख) भूयाश्चाहं त्वमपि शयने कण्ठलग्ना पुरा मे।
निद्रा गत्वा किमपि रुदती सस्वनं विप्रबुद्धा
सान्तर्हासं कथितमस कृत्पृच्छतश्य त्वया मे।
दृष्टः स्वप्ने कितव! रमयन्कामपि त्वं मयेति

(ग) उदयति हि शशाङ्कः कामिनी गण्डपाण्डुः
ग्रहण परिवारो राजमार्ग प्रदीपः।
तिमिर निकरमध्ये रश्मयो यस्य गौराः।
स्त्रुतल जल इव पङ्के क्षीरधाराः पतन्ति

(घ) आलोके ते निपतति पुरा सा बलि व्याकुला वा
मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती।
पृच्छन्ती वा मधुरवचनां सारिकां पञ्चजरस्थां
कच्चिद् भर्तुः स्मरसि रसिके ! त्वं हि तस्य प्रियेति।

3. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए : प्रत्येक 10

(क) शिखा प्रदीपस्य सुवर्णपिञ्जरा
महीतले सन्धिमुखेन निर्गता।
विभाति पर्यन्ततमः समावृता
सुवर्णरेखेव कषे निवेशिता

(ख) उन्नमति नमति वर्षति गर्जति

मेघः करोति तिमिरौघम्।

प्रथम श्रीरिव पुरुषः करोति रूपाण्यनेकानि

(ग) स्त्रीषु न रागः कार्यो रक्तं पुरुषं स्त्रियः परिभवन्ति।

रक्तैव हि रन्तव्या विरक्त भावा तु हातव्या

(घ) अस्येष नाम परिभूतदशो दरिद्रः

प्रेष्यः परत्र फलमिच्छति नास्य भर्ता।

तस्मादमी कथमिवाद्य न यान्ति नाशं

ये वर्धयन्त्यसदृशं सदृशं त्यजन्ति

खण्ड—ख

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

$2 \times 10 = 20$

(i) 'साहित्यदर्पण' के अनुसार काव्य के प्रयोजनों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

(ii) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दृश्य काव्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

(iii) आचार्य विश्वनाथ के अनुसार ध्वनि काव्य को स्पष्ट कीजिए।

(iv) 'मेघदूत' में दिए गए प्रकृति-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : प्रत्येक 5

(क) प्रकरण

(ख) विषकम्भक

(ग) अर्थोपक्षेपक

(घ) अर्थप्रकृति

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का चरित्र-चित्रण कीजिए : प्रत्येक 5

(क) यक्षिणी

(ख) वसन्तसेना

(ग) चारुदत्त

(घ) शकार